स्त्राोत भाषा से लक्ष्य भाषा में संतुः अनुवाद

डॉ संध्या गर्ग,

एसोसिएट प्रोपेफसर,
जानकी देवी मेमोरियल कॉलेज

मानव समाज में भाषा का उद्भव एक व्रफांति ही थी जिसने मानव सभ्यता के विकास में गति ला दी। अपनी बात को अभिव्यक्त करने से बढ़कर मनोवैज्ञानिक सुख तो दूसरा हो ही नहीं सकता था साथ ही इसने ज्ञान विज्ञान के क्षेत्राों के बंद कपाट भी खोले। एक सामूहिक विकास के लिए आवश्यक था कि समान विचार के व्यक्ति एक साथ कार्य करें और इन विचारों के आदान–प्रदान में भाषा एक महत्वपूर्ण माध्यम बनी।

मानव सभ्यता के विकास के साथ पृथ्वी के अलग–अलग कोनों में व्यक्तियों ने अपने समाज और भाषाएँ बनाईं। और तब दूसरी भाषा के साहित्य, ज्ञान–विज्ञान को समझने के लिए प्रत्येक भाषा सीखना संभव ही नहीं था अतः अनुवाद का जन्म हुआ। अनुवाद का अर्थ है पीछे बोलना या कहना अर्थात् जो कुछ पहले कहा जा चुका है उसी को बाद में कहना। डॉú भोला नाथ तिवारी ने भी कहा है– ''प्राचीन भारत में शिक्षा की मौलिक परम्परा थी। गुरू जो कहते थे शिष्य उसे दोहराते थे। इस दोहराने को भी अनुवाद या 'अनुवचन' कहते थे। प्राचीन काल से ही अनुवाद का विश्व संस्कृति के विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान रहा है। बेबीलोन में बहुभाषा भाषी जनता के होने के कारण प्रशासनिक कार्यों में अनवुाद की सहायता ली जाती थी। रोम के लोगों ने ग्रीक व भारतीय ग्रंथों का अनुवाद कर अपनी संस्कृति के लिए नये आयाम खोजे। बाइबल का अनुवाद लगभग सभी यूरोपीय भाषाओं में हुआ वहीं बौ(साहित्य, रामायण का अनुवाद संस्कृत, पालि से चीनी कोरियन, जापानी व इन्डोनिशियन भाषाओं में हुआ।

हिंदी में अनुवाद अंग्रेजी के ज्तंदेसंजपवद का पर्याय है। कुल मिलाकर देखा जाए तो अनुवाद एक सेतु है। अनुवादन को अनुवाद में इस पार से उस पार तक सामग्री को ले जाने का दायित्व होता है जिसकी शर्त होती है उस सामग्री को पूर्णतः और यथावत् बिना घटाए या बढ़ाए पहुँचाना। इस कार्य में अनुवादन जितना सपफल होता है, उतना ही उत्कृष्ट अनुवाद होता है।

अनुवाद का मूल उद्देश्य स्त्राोत भाषा की रचना भाव या विचार लक्ष्य भाषा में यथा सम्भव अपने मूल रूप में लाना तथा अनुवाद के लिए स्रोत भाषा में भावों या विचारों को व्यक्त करने के लिए जिस अभिव्यक्ति का प्रयोग है, उसके अध्कि से अध्कि समान अभव्यक्ति लक्ष्य भाषा में होनी चाहिए। अनुवाद में इस बात का भी ध्यान रखना पड़ता है कि मूल कथन का तात्पर्य, अर्थ तथा कथन के भाव और भाषा की भंगिमा क्या है? अतः भाषा ध्वन्यात्मक प्रतीकों के स्थान पर लक्ष्य भाषा के प्रतीकों का प्रतिस्थापन है। स्त्राोत भाषा के प्रतीकों के स्थान पर लक्ष्य भाषा के प्रतीकों को रखने का व्रफम ऐसा होना चाहिए कि स्रोत भाषा के कथ्य को लक्ष्य भाषा में आने पर विस्तार संकोच या किसी ओर तरह का परिवर्तन न हो उसके लिए उसे मूल को हृदयंगम करके ही लक्ष्य भाषा में डालना होता है। जैसे सेंट जेरोम ने कहा है, अनुवाद में शब्द की जगह शब्द नहीं बल्कि भाव की जगह भाव होना चाहिए। जबकि ड्राइडन कहते है कि शब्द के लिए शब्द या पंक्ति के लिए

पंक्ति रखकर शब्दानुसार प्रकृति की रक्षा करते हुए लेखक की शैली और आत्मा की रक्षा करनी चाहिए। वास्तव में अनुवाद एक पुनः सृजन है इसलिए मौलिक कृति जैसा ही होना चाहिए परन्तु दोनों की सृजन प्रव्रिफया में अंतर होने के कारण अनुवाद को अनुवाद लगना चाहिए यह सही भी है।

यहाँ यह बात भी ध्यान रखने योग्य है कि अनुवाद की एक समान प्रव्रिफया हम सभी प्रकार के साहित्य के लिए नहीं अपना सकते हैं। वैज्ञानिक साहित्य, उच्च प्रौद्योगिकीय व गणित के अनुवाद में शब्दानुवाद का ही प्रयोग करना होता है। वहीं तथ्यात्मक अनुवाद के लिए शब्दाश्री अनुवाद या पर्यायानुवाद भी अपेक्षित होता है जिसमें भूल भाषा की इकाई जैसे पद, पदबंध मुहावरें आदि के प्राप्त पर्याय (लक्ष्य भाषा में) के आधर पर ही अनुवाद किया जाता है। भोला नाथ तिवारी का कहना है ''यदि अनुवाद अत्यन्त सर्तकता बरत कर उपर्युक्त त्रुटियों से बचे तो बढ़िया अनुवाद–यदि वह मूल के भाव को सपफलता पूर्वक व्यक्त करने में समर्थ है, वास्तविक अनवुाद हैं।

वास्तव में अनुवादा दोहरी प्रव्रिफया है जिसके एक सिरे पर स्रोत भाषा का लेखक है औद दूसरे सिरे पर अनवुादक। स्रोत भाषा के प्रतीक कोडीकृत हो कर अनुवादक तक पहुँचते हैं। अनवुादक अपने सामाजिक और सांस्कृतिक अनुभव के आधर पर उस कोडीकरण से संकेतित अर्थ ग्रहण करता है। तथा पिफर लक्ष्य भाषा के प्रतीकों के माध्यम से अनुवाद पाठ में उस सामग्री को बदल देता है। इस प्रकार अनुवाद प्रव्रिफया दो भाषाओं के बीच का संप्रेषण व्यापार है। यह संप्रेषण भाषा के दो स्तर पर संभव होता है। एक का संबंध प्रत्येक भाषा की विशिष्ट व्याकरणिक व्यवस्था के साथ होता है।

भारतेन्दु ने कहा है–

''मैं सब विद्याा की कहूँ होई जू पै अनुवाद

निज भाषा महै तो सबै याको लहै सवाद।''

अनुवाद के विभिन्न रूपों को ध्यान में रखते हुए यदि स्त्राोत भाषा और लक्ष्य भाषा की दृष्टि से देखा जाए तो अनुवाद की समस्याएँ और साथ ही अनुवाद की गंभीरता और विशिष्टता का अनुमान लगाया जा सकता है। सबसे प्रथम काव्यानुवाद को लेते हैं। काव्य का अनुवाद कठिन कार्य है। काव्य कृति एक अखंड इकाई होती है। किन्तु व्यवहार के स्तर पर विवेचन व्याख्या आदि के लिए उसके कथ्य या विषयवस्तु तथा कथन–शैली एवं शिल्प पक्ष को पृथक कर देखा जाता है। काव्यानुवाद में इन सभी पक्षों से सम्ब(अलग–अलग कठिनाईयां उभर कर सामने आती है। वास्तव में किसी भी प्रकार के सर्जनात्मक साहित्य का अनुवाद अध्कि जटिल व कठिन होता है। भाव और कल्पना अत्यंत सूक्ष्म होते हैं उनका शब्दानुवाद प्रायः संभव नहीं होता है। उसमें अनुवादक को शब्द–संस्कार व शब्द–चयन करना होता है उसके साथ ही उसे कथ्य निर्वाह, संरचनात्मक वैशिष्टय और आगत शब्दों का भी ध्यान रखना होता है। डॉú भोला नाथ तिवारी ने कहा है कि (7) स्त्राोत भाषा में जो शब्द होते हैं वे लक्ष्य भाषा में आंतरिक बाह्य व प्रभाव की दृष्टि से समान नहीं हैं। काव्य की अर्थ, रचना व अभिव्यंजना अनूदित नहीं होती। रूपक बिम्ब और नाद सौन्दर्य तो अनुवादक के लिए चुनौती बन जाते है। जैसे 'बिजली' दौड़ गई से जिस संवेदना को प्रकट किया गया है वह 'Thunder' शब्द से अभिव्यंजित नहीं हो सकता या

''माला पेफरत जुग भया पिफरा न मन का पेफर

कर का मनका डारि के, मन का मनका पेफर।''

इसमें कवि ने यमक का जो चमत्कार दिखाया है वह भ्मंतज और ठमंके के सहारे अनूदित हो ही नहीं सकता। हर सभ्यता संस्कृति के अलग–अलग प्रतीक हैं 'अक्षत' पूजा में है और

'चावल' खाने में, अब अंग्रेजी भाषा का 'त्पबम' इसे कैसे अभिव्यक्त कर सकता है? काव्य का सौन्दर्य लक्षणा और व्यंजना पर ही आश्रित रहता है। लक्षणा का रूपांतर करने के लिए लक्ष्य भाषा में ऐसे पर्यायों का चयन करना पड़ता है जिनमें मूर्तविधन की क्षमता हो। अंग्रेजी के वाक्य 'He is wise as an Owl' का अनुवाद हिंदी में ''वह उल्लू की तरह बु(िमान नहीं हो सकता है। क्योंकि हमारे यहाँ उल्लू बु(िमानी का प्रतीक नहीं है। इसी प्रकार 'कुलदीपक' Family lamp नहीं होगा बल्कि ावचम वि िउपसल होगा। इसी प्रकार छेद कविता का साध्न–उपकरण है प्रत्येक भाषा के अपने छेद होते हैं जो कि मात्राा, वर्ण और स्वरपात आदि की एम–विषम योजनाओं पर निर्भर करता है। ऐसे में अनुवादक के पास एक ही उपाय होता है कि वह मूल लय की सनुसर्जना करे। कविता का अनुवाद प्रायः कवि ही करते हैं। ऐसे में कवि हृदय का अपना संवेग भी कभी कभी बाध बन जाता है।

उदाहरण स्वरूप 'Magic Shadow Show' को बच्चन ने इंद्रजली माया का खेल कहा है। गुप्त जी ने 'माया की छाया का कौतुल भर' तथा केशवप्रसाद पाठक ने उसे 'माया का ही विरचा छाया खेल' कहा है। भोला नाथ तिवारी ने इसके लिए सुझाव दिया है कि 'सर्वप्रथम अनुवादक काव्य का अनुवाद गद्य में करने का प्रयास करें। यदि अनुवाद ठीक नहीं हो पा रहा हो तो मुक्त छंद में करें और यदि पिफर भी कठिनाई हो तो गद्य में करें।

काव्यानुवाद के बाद नाट्यानुवाद की बात करें तो उसमें भी अनुवादक को केवलनाटक के वार्तालाप को ही नहीं समझना होगा बल्कि मंचीय साज–सज्जा, प्रकाश–प्रभाव, ध्वनि संयोजन आदि की संकल्पना को संवेदनशील हो कर मूल को समझना होगा। नाटक एक दृश्यविध है अतः उसके दृश्य बिंबों को ज्यों का त्यों लक्ष्य भाषा में रखना भी संभव नहीं होता है। भाषा के अनुसार ही पात्राों के संवादों की ध्वनि, शब्द रचना, रूप रचना और वाक्य रचना में भी भिन्नता आती है, अतः अनुवादक को लक्ष्य भाषा से ऐसे प्रयोगों को चुन कर ही पात्रा के अनुकूल भाषा–शैली का प्रयोग करना चाहिए।

कथा साहित्य का अनुवाद करते हुए भी पूरी रचना को एक इकाई मानकर उसके मूल मंतव्य को समझते हुए भाषिक अभिव्यक्तियों के प्रति सतर्कता बरत कर अनूदित पाठ को अपनी ओर से अलंकरित व अतिरंजित नहीं करना चाहिए। मुहावरे और लोकोक्तियाँ जो कि किसी भी भाषा की अर्थ पूर्ण उफर्जा का संरक्षण कर प्रयोग द्वारा उस क्षमता का सार्थक प्रकाशन करती है इनका अनुवाद भी एक समस्या होती है। यह किसी भी लेखक की शैली का एक सहज अंग होती है। मूल लेखक की सांस्कृतिक चेतना को ध्यान में रखते हुए स्त्राोत भाषा में प्राप्य मुहावरे के शब्द और अर्थ के समान ही मुहावरे लक्ष्य भाषा में खोजकर उनका प्रयोग करें। जैसे

To be caught red handed . रंगे हाथों पकड़े जाना

Ups and down of life .जीवन का उतार चढ़ाव

कभी कभी भ्रम में मुहावरों का गलत अनुवाद अर्थ का अनर्थ भी कर सकता है। जैसे blood faced का अनुवाद निर्भीक मुख नहीं होगा, निर्लज्ज होगा। इसी प्रकार मुहावरों की तरह लोकोक्तियाँ भी परिवेश और संस्कृति से जुड़ी होती है। उनसे कट कर उनका अर्थ नहीं निकाला जा सकता। जैसे– 'करवा कुम्हार का, घी जज मान का, पंडित बोले स्वाहा।' जैसी लेकोक्ति का अनुवाद करना असंभव ही है। इसी प्रकार की कुछ अन्य लोकोक्तियों की लक्ष्य एवं स्रोत भाषा में समानता–

Every man's house in his castle – अपना मकान कोट समान

A Bad car painter queries with his Tools — नाच न जाने आँगन टेढ़ा

इस प्रकार अनुवाद कार्य एक श्रमसाध्य कार्य है। 'अनुवादक प्रवंचक होते हैं।' 'अनवुाद पाप है' 'अनुवाद छल है' जैसी उक्तियाँ अनुवाद कार्य को सरल मान कर किए गये कार्यों के लिए ही है। स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा का परिवेश, संस्कृति और वैचारिक सोच की भिन्नता वे प्रमुख तत्व हैं जिन पर अनुवाद कार्य की सपफलता निर्भर करती है। एक कहावत है— If a women is beautiful She is not faithful and if faithful, not beautiful. इसी प्रकार अनुवाद कर्म के लिए भी कहा गया— अनुवाद यदि सुंदर होगा तो मूलनिष्ठ नहीं होगा और मूलनिष्ठ होगा तो सुंदर नहीं।